विचार बिन्दु

अत्याचार और भय दोनों कायरता के दो पहलू हैं। –अज्ञात

सेनाओं में भर्ती की अग्निपथ-अग्निवीर योजना--गरीब ग्रामीणों व किसानों पर प्रहार

भारत की सेनाओं में, सबसे निचले पायदान पर सैनिक भर्ती की अब तक की प्रचलित भर्ती प्रक्रिया के स्थान पर नई अग्निवीर/अग्निपथ योजना की घोषणा को महीना होने को आया।

इस अवधि में सेना के सभी अंगों के सेवारत व सेवा निवृत्त उच्च अधिकारियों, सेना के सेवा निवृत्त कनिष्ठ स्तरीय अधिकारियों, भूतपूर्व सैनिकों, सरकार के कई मंत्रियों, उच्चाधिकारियों, सत्तासीन राजनीतिक पार्टी के बड़े नेताओं के विचार सामने आ चुके हैं।

सभी प्रमुख समचार पत्रों, टीवी चैनल्स में भी विस्तार से इस योजना पर चर्चा हुई है।

भाजपा से भिन्न राजनीतिक दलों के भी विभिन्न प्रकार से धरना-प्रदर्शन आदि के माध्यम से इस योजना के पक्ष में कम और विपक्ष में ज्यादा विचार सामने आए।

इन सब माध्यमों से इस योजना के संबन्ध इसके पक्ष, विपक्ष में जो विचार प्रकट हुए उनका सार निम्नानुसार है:-

1. इस योजना के पक्ष में जो विचार आए है, उनके अनुसार इस योजना का प्रमुख उधेश्य भारतीय सेना की औसत उम्र यथा सम्भव 26 से 30 वर्ष रखना है अर्थात भविष्य की युवा भारतीय सेना जो हर दृष्टि से इजराइल, रूस, अमरीका, चीन आदि देशों की सेनाओं जैसी होगी। जनता में सेना के प्रति ओर आदर बढ़ेगा।

शनै: शनै: देश में 25-26 वर्ष से अधिक आयु का एक ऐसा वर्ग होगा जो सैन्य अनुशासन में ढला होगा।

इस योजना के माध्यम से समाज में अनुशासन बढ़ेगा

समाज को इसका बहुत लाभ होगा।

चार साल के पश्चात जो युवक सेना से बाहर होंगे वे ज्यादा स्किल जानने वाले, अनुशासित युवा होंगे जिन्हें सरकारी और प्राइवेट सेक्टर में आसानी से नौकरियां उपलब्ध होंगी अथवा उन्हें जो फंड मिलेगा उस से वे आसानी से अच्छा व्यापार-धन्दा कर, स्वरोजगरित होंगे और दूसरों के लिए भी रोजगार सृजक बन सकेंगे।

वर्तमानं में रक्षा बजट का बहुत बड़ा भाग वेतन, पेंशन मद में व्यय होने के कारण, सेनाओं को आधुनिकतम हथियार आदि उपलब्ध कराने और सेना के आधुनिकीकरण के लिए पर्याप्त धन शेष नही रहता।इस योजना के लागू होने के बाद आधुनिकतम हथियारों के क्रय के लिए अधिक धनराशि उपलब्ध होगी। आधुनिकतम हथियारों से सुसज्जित आधुनिक सेना देश की रक्षा में अधिक सक्षम होगी। इस से विश्व में देश का गौरव बढ़ेगा।

एक न समझ में आ सकने वाला सा तर्क यह भी सामने आया कि इस योजना से देश की सेना सही माइनों में अखिल भारतीय सेना होगी। (क्या अब ऐसी नहीं है????) वर्तमान में तो देश के मात्र 150-175 जिलों से ही लोग सेना में भर्ती होते है किन्तु इस योजना के माध्यम से देश के 733 जिलों के हर कोने से, हर जाति, वर्ग का युवा, सेना की प्रत्येक वेकेंसी के लिए भर्ती का हकदार होगा। इस योजना के बाद, यह पीपल्स सेना होगी जिसकी पहचान किसी क्षेत्र या वर्ग से जुड़ी नहीं होगी।

सरकार के उच्चतम स्तर से यह साफ कर दिया गया कि यह योजना वापिस नहीं ली जाएगी। युवाओं के हित के लिए यह योजना है, जिसको नोजवान अभी समझ नही पा रहे।

कुछ अधिकारीयों-नेताओं का तो यहां तक कहना था कि सेना कोई रोजगार की स्कीम थोड़े ही न है? देश सेवा का अवसर है।

तो फिर, राज्य सेवा आयोगों आदि के माध्यम से जो विभिन्न प्रकार की भर्तियां होती है वे रोजगार है या ओर कुछ??

2. इस योजना के विपक्ष में जो तर्क, विचार आए उनमें सबसे प्रमुख यह है कि इस पर संसद व उसकी समितियों में व अन्य स्तरों पर व्यापक विचार-विमर्श नहीं हुआ। विचार-विमर्श हुआ भी होगा तो केवल उच्च अधिकारियों, नेताओं तक सीमित रहा होगा। सेना भर्ती का एक प्रमुख स्टेकहोल्डर युवा वर्ग है। उनसे कोई विचार-विमर्श नहीं हुआ। अचानक से निर्णय ले लिया गया।

अमरीका, इजराइल, यूके, रुस आदि देशों में और हमारे देश की युवा जनसँख्या में भारी अंतर है। वहां कमी और यहां आवश्यकता से अधिक हैं। वहाँ की परिस्थितियां भिन्न है। दूसरे देश की नीतियों का अंधानुकरण घातक भी हो सकता है।

अग्नि वीरों के तो चार साल यही तलवार लटकती रहेगी कि चार साल बाद क्या होगा? इस प्रकार की मनस्थिति में रहकर वे रेगुलर सैनिकों के साथ पूर्ण सामंजस्य के साथ काम कर पाएंगे या फिर, मात्र उनके ऑर्डरली के रूप में ही काम करेंगे? क्या 06 माह में अग्निवीर सैनिक इन सब परिस्थियों में युद्ध के लिए ढलना सीख जाएगा?

कुछ पूर्व सैनिकों का कहना था कि सेना में जो भी हथियार राइफल, मशीनगन, तोप, टैंक, मिशाइल आदि व अन्य कोई भी दूसरे हथियार काम आते है, उसे अकेला व्यक्ति हंडेल करेगा या एक से अधिक व्यक्ति, इसके नॉर्म्स तय है। इन नॉर्म्स नें बिना कोई परिवर्तन के सेना के मैनपावर में कटौती का क्या औचित्य? 06 माह की ट्रेनिंग में जवान इन सब हथियारों की सिखलाई में पारंगत हो जाएगा इस पर पूर्ण शंसय है।

भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमा पर मरुस्थल, पहाड, नदियां, बर्फानी चोटियां, समुद्र सब हैं, क्या 06 माह में अग्निवीर सैनिक इन सब परिस्थियों में युद्ध के लिए ढलना सीख जाएगा?

अग्नि वीरों के तो चार साल यही तलवार लटकती रहेगी कि चार साल बाद क्या होगा? इस प्रकार की मनस्थिति में रहकर वे रेगुलर सैनिकों के साथ पूर्ण सामंजस्य के साथ काम कर पाएंगे या फिर, मात्र उनके ऑर्डरली के रूप में ही काम करेंगे?

क्या भिन्न प्रान्तों व वर्गों के सैनिकों से बनी सैन्य टुकडियां जैसे सेक्सन, पलटून, कम्पनियां पूरे जोश, गहन सामंजस्य से काम कर पाएगी?

यदि एक अग्निवीर की 4 साल की अवधि में युद्ध जैसी अत्यंत कठिन परिस्थितियां उत्तपन्न होने पर उन्हें अग्रिम पंक्तियों में दुश्मन का सामना करने को कहा जाएगा तो अनुशासन सम्बन्धी क्या क्या परिस्थितियां सामने आ सकती हैं, इस पर विचार किया गया?

75 प्रतिशत छंटनी किये गए अग्निवीरों में से कुछ को नोकरियाँ मिल जाएंगी, कुछ अपना व्यवसाय आदि भी कर लेंगे किन्तु जो भी इस प्रकार एडजस्ट नहीं जो पाएंगे, उन में से सब नहीं तो कुछ जरूर विभिन्न प्रकार के अवैध कार्यों में संलिप्त गैंग्स में शूटर के रूप में जगह पा लेंगे। इस से समाज में गम्भीर अपराधीकरण की स्थितियां उत्पन्न हो सकती है।

इसके अतिरिक्त 4 साल बाद 25 प्रतिशत कैसे रखे जाएंगे, 75 प्रतिशत की छंटनी कैसे होगी, इसमें कितनी पारदर्शिता, ईमानदारी होगी इसमें भी अस्पष्टता है। अब भी भर्तीयों में भ्रष्टाचार के आरोप आम चर्चा के विषय रहते हैं।

3. कुछ अभिभावकों के भी विचार सामने आए। उनका कहना था रोजगार है ही कहाँ? इस योजना में हजार कमजोरियां हैं किन्तु गरीबों के पास विकल्प क्या है? हमारी मजबूरी है कि हमे बच्चों को इसके लिए भी कोचिंग्स में खर्चा कर तैयार करवाना पडेगें, चाहे चार साल बाद वे पुन: बेरोजगार ही क्यों न हो जाएं?

ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारों की शादी नहीं हो पाती है। पेरेंट्स यह भी सोचते हैं कि 4 साल के लिए ही सही, एक बार इसके सहारे बच्चों की शादी तो हो।

4. गांव के किसानों, मजदूरों से भी चर्चा की और उनकी जो समझ-शंकाएं सामने आई, वे निम्नानुसार हैं::--

ग्रामीण क्षेत्रो में यह भी आम चर्चा का विषय है कि सरकार की यह नीति गरीब ग्रामीणों-किसानों के बच्चों के विरुद्ध है। सांसद, विधायक अपने पेंशन, भत्ते आदि का त्याग कर, सेना के व सिविल साइड के अफसर कुछ कुछ त्याग कर, उदाहरण प्रस्तुत करें और फिर जनता से उनकी बातों का अनुशरण करने को कहें। जिसके पैर फटे न बीवाई वह क्या जानें पीर पराई?? ज्यादा न सही, स्थाई अधिकारियों, कर्मचारियों की सेवा अवधि 5 साल ही घटाओ,फिर देखो कितनी स्वीकार्य बनती है।

कुछ सामान्य लोगों का तो यहां तक मानना है कि सेना के आधुनिकीकरण लिए धन की उपलब्धता का बहाना भी सही नही। सरकार अनावश्यक खर्चे कम करके, सरकारी खरीदों-प्रोजेक्ट्स के कार्यों में कमीशन खोरी रोक कर तथा कम वरीयता वाले प्रोजेक्ट्स पर व्यय रोक कर इस कार्य हेतु धन निकाल सकती है। देश की सुरक्षा पर व्ययय से बड़े अन्य प्रोजेक्ट्स पर व्यय या अनावश्यक व्यय नहीं हो सकते।

कुछ ग्रामीण,किसानों का कहना था कि किसानों, गांव वालों की सुनता कोन है? सरकारी फैसले लेने में उनकी परिस्थितियों से अनिभिज्ञ लोग बैठकर फैसले कर लेते हैं। उन्हें न फसल का सही मूल्य मिलता, न सही गणना से घोषित होती, न पर पूरी खरीदी होती, न उन्हें जो खाद-बीज-दवाइयां बाजार से लाने पड़ते है उसके मूल्यों पर कोई लगाम। ऊपर से आवारा पशुओं से फसल नष्ट हो रही हैं किन्तु आवारा पशुओं की पैरवी करने के लिए तो गली-गली में विभिन्न पट्टाधारी लोग घूमने लग गए -आवारा पशु का कुछ नही कर सकते। सरकार यदि मनरेगा मजदूरी के बराबर दिहाडी वाली कच्ची नोकरी भी देगी तो हम गरीबों को तो उस ओर भागना ही पड़ेगा--

(उपरोक्त सब, आम आदमी के विचार है जो उन्होंने चर्चाओं में बताया)

6. कुछ लोगों के सुझाव भी आए है जैसे कि--

शुरू में अग्निवीरों की छंटनी 4 के बजाय 5, 6, 7 साल में कई जानी चाहये

शुरू के 5-7 साल के लिए छंटनी 75 प्रतिशत के बजाए 40-50 प्रतिशत की जाए। इसके पश्चात, इसका प्रभाव, स्वीकार्यता, कमियों का अध्ययन कर योजना को ओर बेहतर बनाया जा सके।

5 साल बाद जब भी अग्निवीरों को रिटायर किया जाए, उन्हें वर्तमानं में प्रस्तावित पेकेज के अतिरिक्त सेवा के प्रति वर्ष के लिए एक माह की अतिरिक्त धनराशि दी जाए जो एक प्रकार से ग्रेच्युटी (जो अच्छी सेवा का प्रतीक होती है) कही जा सकती है।

उन्हें पूर्व सैनिक का सम्बोधन दिया जाए। पूर्व सैनिकों को मिलने वाली समस्त अन्य सुविधाएं दी जाएं।

एक निश्चित पूंजी आधार या अन्य मानदंडों के अनुसार चिन्हित 100-50 बड़ी सरकारी, प्राइवेट कम्पनियों में सुरक्षा विभाग में सुपरवाइजरी स्टाफ व प्रहरियों के समस्त पद अग्निवीरों के लिए आरक्षित किए जाएं जिस से यह पता चले कि इन कम्पनियों को इस योजना की स्वीकार्यता का स्तर वास्तविक है या मात्र दिखावटी।

केंद्र व राज्यों के अर्धसैनिक बलों में प्रतिवर्ष की भर्तियों में कम से कम आधे पद पूर्व अग्निवीरों के लिए आरक्षित किए जाएं। इसके लिए केंद्र व राज्य सरकार अविलम्ब नियमों में आवश्यक संशोधन करें।

हर साल 50 लाख नए युवा रोजगार चाहते हैं--करोड़ों न करोड युवा रोजगार बाजार में घूम रहे हैं। घूम फिर कर सार यह निकलता है कि देश में रोजगार की भयंकर कमी और इसका समाधान हर क्षेत्र में तीव्र गति से रोजगरों के सृजन से ही होगा।

-अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)

दो का पागलपन : एक खतरनाक मनोविकार

ब्रिटिश राज सेभारतीय उपमहाद्वीप की आजादी के समय एक प्रतिष्ठित व्यक्ति लखनऊ से बड़े सपनों, बड़ी उम्मीदों के साथ पाकिस्तान गया। उसे वहां जाते ही एक मामूली-सी नौकरी मिली जो बच्चों की प्लाटून का पेट नहीं भर सकती थी। आर्थिक दबाव से यह व्यक्ति जल्द ही मर गया तो उसकी दुखी पत्नी विलायत महल ने एक दिन मौका मिलने पर पाकिस्तान के प्रधान मंत्री को थप्पड़ मार दिया। उसे पागलखाने भेज बिजली के झटके लगाए गए।

वहां से छूटते ही वह किसी तरह भारत भाग आयी और दिल्ली रेलवे स्टेशन के विश्राम गृह पर यह कह कर कब्जा जमा लिया कि वह और उसके बच्चे अवध के राज परिवार के वारिस हैं और उन्हें उनकी संपति वापस की जाए। अंतरराष्ट्रीय और घरेलू दबाव में आकर भारत सरकार ने 1970 के दशक में दिल्ली के जंगल में एक टूटी-फूटी शिकारगाह, जिसका नाम मालचा महल था, उस परिवार को दे दिया। विलायत महल ने अपने बेटे और बेटी को इस भ्रम में डाल रखा था कि वे राज परिवार के सदस्य हैं जबकि असल में तो वे एक मध्यम परिवार के लोग थे। उनकी असलियत का खुलासा न्यू यॉर्क टाइम्स की महिला पत्रकार एलेन बेरी ने 2020 में किया। इस बीच विलायत महल, उसका बेटा और बेटी कंगाली की जिंदगी जीते हुए मर गए।

इस पूरे मामले में एक बात उभर कर सामने आती है कि विलायत महल ने अपने झूठे सपनों की कहानी में अपने पढ़े लिखे बच्चों को भी बांध लिया जिसके फलस्वरूप वे निहायत ही निक्कमे और घमंडी हो गए। एक मानसिक रूप से बीमार इंसान ने दो और लोगों को मानसिक रोगी बना दिया। आधुनिक चिकित्सा की मानसिक रोग शाखा में इस तरह की बीमारी को फोली अ ड्यू यानि दो लोगों की मानसिक विकृति कहा जाता है। इसको दोहरा पागलपन, सोहबत का मनोविकार, साझा मनोविकार या फिर प्रेरित मनोरोग भी कहा गया है।

डॉ रामावतार शर्मा

फोली अ ड्यू फ्रेंच शब्द है जिसका मतलब होता है दो लोगों की मूढ़ता। इसमें एक व्यक्ति प्राथमिक रोगी होता है जो कि अपने आप को किसी अति भ्रम की स्थिति में ले जाता है जैसे कि उपरोक्त उदाहरण में विलायत महल थी। यह व्यक्ति फिर दूसरे या अन्य कई लोगों को अपनी ही स्थिति में ले आता है जिससे सामूहिक मनोरोग फैल जाता है। इस से भी भयानक हादसा कई साल पहले दिल्ली में हुआ था जिसमें एक ही परिवार के दस सदस्यों ने आत्महत्या कर ली और अपनी बुजुर्ग दादी को गला घोट कर मार डाला था। पुलिस को इस घर से कई डायरियां मिली जिसमें विगत 11 वर्ष से ये लोग सामूहिक आत्महत्या द्वारा पूर्ण आनंद एवम् वापस जीवित हो जाने के सपने देखते थे। परिवार का एक युवा सदस्य प्रथम रोगी पाया गया जिसने अन्य सब को प्रभावित किया।

■ आज सामाजिक मीडिया द्वारा एक व्यक्ति दूसरे हजारों लोगों को प्रभावित कर रहा है

आज हम लोग इंटरनेट द्वारा एक मायावी दुनिया में जीने लगे हैं जहां सामाजिक मीडिया द्वारा एक व्यक्ति दूसरे हजारों लोगों को प्रभावित कर रहा है। हम लोग देश, धर्म, धर्म के स्थापकों, ऐतिहासिक पात्रों और राजनीति के नायकों, खलनायकों के बारे में अप्रमाणिक बातों को सत्य मान रहे हैं। पुस्तकों के स्थान पर फिल्मों, वीडियो तथा कॉपी पेस्ट आदि द्वारा प्रभावित हो कर उदयपुर हत्याकांड जैसे जघन्य अपराध करने लगे हैं। फोली अ ड्यू अब दो की बजाय हजारोंमें फैल सकता है, राष्ट्रीय उथल पुथल को जन्म दे सकता है। अभी कुछ समय पहले तमिलनाडु में एक माता-पिता ने नींद में सोई अपनी दो युवा पुत्रियों की खोपडियां भारी पत्थरों से इसलिए खोल दी कि उनमें छुपी प्रेतात्मा बाहर निकल जायेगी और सूर्योदय के साथ ही बेटियां फिर जीवित हो जाएंगी।

ये उदाहरण हमें सचेत करते है कि तेजी से परिवर्तित होते समय और जीवनशैली द्वारा यह एक वैश्विक महामारी का रूप ले सकता है जिसमें लोग बड़े स्तर पर हिंसा कर सकते हैं। मनोचिकित्सक अब फोली अ फैमिले (परिवार का पागलपन) की बातें करने लगे हैं तो फिर फोली अ नेशन (राष्ट्र का पागलपन) क्यों नहीं हो सकता?

डॉ रामावतार शर्मा,
चिकित्सक एवं लेखक

गहरे गड्ढों में तब्दील 50 गांवों को मुख्यालय से जोड़ने वाली सड़क

हिण्डौन सिटी,(का.सं.)। उपखंड मुख्यालय से खरेटा तक की सड़क में गहरे गड्ढे बन चुके हैं। ऐसे में 50 गांव के लोगों की उपखंड मुख्यालय तक पहुंचने की राह मुश्किल हो गई है। नगर परिषद के नेता प्रतिपक्ष दिनेश सैनी ने बताया कि इस सड़क का निर्माण पिछले लगभग दो दशक से नहीं हुआ है। वर्तमान

■ स्कूल पहुंचने में बच्चों व शिक्षको को हो रही परेशानी

में बाढ़ , करसौर्ली , आरेणी, बमनपुरा, खोहरा, घूसेटी, जगर, कोटवास, नथे का पूरा, अटक, पोछड़ी, मासलपुर ,मदनपुर, खेड़ा, सिलोती, काछीपुरा, पटपरीपुर, जेवर, नागरियां का पूरा, नृसिंहपुरा, खीप का पूरा, खाना कर पूरा सहि लगभग 50 गांवों के लोगों रोजाना स्कूल जाने में परेशानी हो रही है व छात्र-छात्राए एवं अध्यापक व ग्रामीण परेशान है।

गड्ढों मे तब्दील सड़क पर जान जोखिम में डाल सफर कर रहे हैं ग्रामीण

जीर्ण-क्षीर्ण अवस्था में गौरवशाली अतीत की कहानी बयां करता इंदौर का किला

इंदौर का किला अलवर से लगभग आठ कि.मी. दूर टपूकड़ा-नूंह मार्ग पर चारों ओर हरी भरी पहाड़ियों से घिरे इंदौर गांव में स्थित है। किले पर जाने वाले रास्ते उबड़-खाबड़, टेढ़े-मेढ़े और कंटीले हैं। सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त स्थान होने के कारण तत्कालीन खानजादा शासकों ने चौदहवीं शताब्दी में इस किले का निर्माण करवाया था।

अरावली की पहाड़ियों की गोद में स्थित यह किला जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। किले के खण्डहरनुमा भवन अपने गौरवशाली अतीत की कहानी स्वयं बयां करते हैं। यह किला अपने सुनहरे दौर में दिल्ली के हुक्मरानों को अपनी ताकत का अहसास कराता था। किले तक पहुंचने के लिए लगभग एक कि.मी. संकरे कच्चे रास्ते से होकर जाना पड़ता है। किले पर स्थित मुख्य महल व मकबरे तक पहुंचने के लिए लगभग चार कि.मी. पैदल चलना पड़ता है। उबड़-खाबड़ कंटीला रास्ता होने के कारण किले के अंतिम छोर तक पहुंचने में कठिनाई आती है।

किले की सुदृढ़ दीवारें किले की भव्यता की गवाही देती हैं। किले में लोक देवता पाबूजी का मन्दिर है। यहां दशहरे पर मेला भरता है, जिसमें बड़ी संख्या में लोग पाबूजी के दर्शन करने आते हैं। किले में एक तरफ शासकों

पन्नालाल मेघवाल

की दस मजारें बनी हुई हैं। किले के बाहर गांव के निकट अठारहवीं शताब्दी की एक मजार यहां की विशालता को दर्शाती है।

1398 ईस्वी में तैमूर के दिल्ली पर आक्रमण के समय इंदौर पर बहादुर नाहर खानज़ादा का शासन था। दिल्ली पर इब्राहिम लोदी के शासन के दौरान यहां पर ज़लाल खान खानज़ादा की हुकूमत थी। दिल्ली पर बाबर के शासन के दौरान इंदौर आगरा सूबे का परगना था। यहां के शासक बाबर के खिलाफ रहे और इंदौर किले का उल्लेख आईने अकबरी में किया गया है। दुर्गम रास्तों के बीच स्थित किले पर मुगल कभी आक्रमण नहीं कर सके। अठारहवीं शताब्दी में इस किले पर कई बार आक्रमण हुए। पहले भरतपुर

के जाट राजाओं ने इस किले पर आक्रमण किया। लेकिन किले को आर्थिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं मानते हुए उन्होंने इस ओर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। इसके बाद में मराठों ने किले पर कब्जा किया। उनसे अंग्रेजी हुक्मरानों ने किले को अपने कब्जे में लिया लेकिन यहां की विषम भौगोलिक स्थिति के कारण

आक्रमणकारी किले को लूटने के बाद सूना छोड़कर चले गए। 1808 ईस्वी में अलवर के राजा बख्तावरसिंह ने किले को अपने अधीन कर लिया। भारत सरकार एवं राज्य सरकार ने अलवर, नीमराणा एवं तिजारा किलों को हेरिटेज होटलों में तब्दील करवाया जिससे ये स्थल पर्यटकों के आकर्षण के केंद्र बने हुए हैं।

1961 ईस्वी में पुरातत्व विभाग ने इस किले को संरक्षित घोषित किया लेकिन इसके जीर्णोद्धार संबंधित कोई कार्य नहीं किया। यदि इस किले को हेरिटेज होटल में तब्दील कर दिया जाता तो यह किला भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होता।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

राज्य सरकार ने चार हजार स्कूल क्रमोन्नत किये, एक में भी प्राचार्य नहीं

बीकानेर, (कासं)। सरकार की ओर से बजट में राज्य के चार हजार माध्यमिक स्कूलों को उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत करने का तोहफा दिया गया जिससे बच्चे व अभिभावक खुश हुए, लेकिन अब इन स्कूलों में शिक्षण व्यवस्था पर भारी पड़ रहा है, इन चार हजार स्कूलों में से अभी तक एक में भी प्राचार्य नहीं है। साथ ही इन स्कूलों में शिक्षण व्यवस्था के लिए 20 हजार स्कूल व्याख्याताओं की जरूरत है।

■ इन स्कूलों में शिक्षण व्यवस्था के लिए 20 हजार स्कूल व्याख्याताओं की जरूरत

■ अभी माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ा रहे वरिष्ठ शिक्षकों से काम चलाया जा रहा है

जिनके बिना अभी माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ा रहे वरिष्ठ शिक्षकों से काम चलाया जा रहा है जो नियम विरुद्ध है। क्योंकि उच्च माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ाने की योग्यता एमए बीएड है ओर जो वरिष्ट अध्यापक वर्तमान में अध्यापन करवा रहे हैं, उनमें से अधिकांश बीए बीएड है। इन स्कूलों में अध्ययन करने वाले उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। स्कूल क्रमोन्नत होने के बाद माध्यमिक शिक्षा के पूर्व निदेशक कानाराम ने राज्य सरकार को इन स्कूलों में पद भरने के लिए पत्र भी भेजा था लेकिन अभी तक ना तो नई भर्ती हुई है ना ही पदोन्नति हुई है जिससे स्कूलों में पद रिक्त है।शिक्षक नेता मोहर सिंह सलावद ने बताया कि उच्च माध्यमिक स्कूल में ऐच्छिक विषयों के तीन व्याख्याता तथा हिन्दी-अंग्रेजी अनिवार्य विषय के एक-एक व्याख्याता सहित प्रति स्कूल पांच पद की आवश्यकता है।

इस तरह चार हजार स्कूलों के लिए ऐच्छिक विषयों के लिए 12 हजार तथा हिन्दी-अंग्रेजी अनिवार्य के लिए चार-चार हजार व्याख्याताओं की आवश्यकता है। साथ ही एक-एक सहायक प्रशासनिक अधिकारी का पद भी खाली है।शिक्षा विभाग ने शिक्षण व्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए विद्या संबल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी का सहारा लेने की घोषणा की परन्तु अभी तक गेस्ट फैकल्टी की योजना भी सिरे नहीं चढ़ पाई है। सरकार ने नया शिक्षा सेवा नियम लागू कर दिया फिर भी विभाग दो सत्रों की वरिष्ठ अध्यापक से व्याख्याता पदोन्नति सूची जारी होने के बाद भी पदोन्नति नहीं कर रहा है।

राशिफल गुरूवार 14 जुलाई, 2022

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 8:18 तक, वैधृति योग प्रात: 8:27 तक, बालव करण दिन 10:12 तक, चन्द्रमा मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-मीन, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज वैधृति पूण्य और अशून्य शयन व्रत।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:28 तक, चर 10:50 से 12:33 तक, लाभ-अमृत 12:33 से 3:56 तक, शुभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:46, सूर्यास्त 7:19

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

धनु
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। कार्य योजनानुसार सम्पन्न होंगे। व्यावसायिक कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होंगे।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। पारिवारिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कर्क
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा।